तीन बच्चे और हींगवाला

सुभद्रा कुमारी चौहान

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

जनवाचन आंदोलन

इस संग्रह में दो कहानियां हैं– 1. *तीन बच्चे* , और 2. *हींगवाला।* दोनों कहानियां बच्चों और उनकी मांओं के इर्द-गिर्द बुनी गई हैं। पहली कहानी में पढ़ें कि मां से बिछुड़े असहाय बच्चे दर-दर की ठोकरें खाते आखिर कैसे अंत तक पहुंचते हैं। दूसरी कहानी में पढ़ें कि दंगों के बीच फंसे बच्चे और उनकी चिंता में घुलती मां की मदद के लिए आखिरकार कौन आता है।

दुखांत और सुखांत के परस्पर दो ध्रुवों पर स्थित ये कहानियां दिल को सहज ही छू लेती हैं।

महान हिंदी कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान (1904-1948) अपनी जोश्शीली कविता "झांसी की रानी" के लिए सबसे ज्यादा जानी जाती हैं। उन्होंने कहानियां भी लिखीं, स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया और अंग्रेजों के खिलाफ बोलने व लिखने के लिए दो बार जेल भी गईं। उनकी कविताओं ने हजारों युवाओं को आजादी के लिए लड़ने को प्रेरित किया।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

तीन बच्चे और हींगवाला

सुभद्रा कुमारी चौहान

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने 'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है। इस आंदोलन का मकसद आम जनता एवं बच्चों में पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

तीन बच्चे और हींगवाला *सुभद्रा कुमारी चौहान*	**Teen Bachche Aur Hingwala** *Subhadra Kumari Chouhan*
रेखांकन संदीप के. लुईस	***Illustration*** Sandeep K. Louis
कवर डिजाइन व लेआउट गॉडफ्रे दास	***Cover Design & Layout*** Godfrey Das
प्रथम संस्करण अप्रैल 2015	***First Edition*** April 2015
सहयोग राशि 20 रुपये	***Contributory Price*** Rs. 20
मुद्रक अर्श ग्राफिक नई दिल्ली-18	***Printer*** ARSH Graphic New Delhi-18

सहयोग : टाटा वैलफेयर ट्रस्ट सोसाईटी, मुंबई

Publication and Distribution

BHARAT GYAN VIGYAN SAMITI

59/5, 3rd Floor, Near K- Block, Ravidas Marg, Kalkaji, New Delhi-110019
Ph. No : 011-26463324, 26469773
E-Mail : bgvsdelhi@gmail.com, Web.: www.bgvs.org

कथा-क्रम

तीन बच्चे

मेरे बच्चों में से प्रत्येक ने अपने लिए एक-एक बगीचा लगाया था। बगीचा क्या, फूलों की छोटी-छोटी क्यारियां थीं। एक दिन सबेरे हम लोगों ने देखा कि उन क्यारियों में फूल खिल आए हैं।

बच्चे ही तो ठहरे। हर एक को अपनी-अपनी क्यारी के फूल अधिक सुन्दर जान पड़े- और इसी बात पर उन लोगों में लड़ाई छिड़ गई। हर एक का कहना था कि उसकी क्यारी के फूल सबसे सुन्दर हैं।
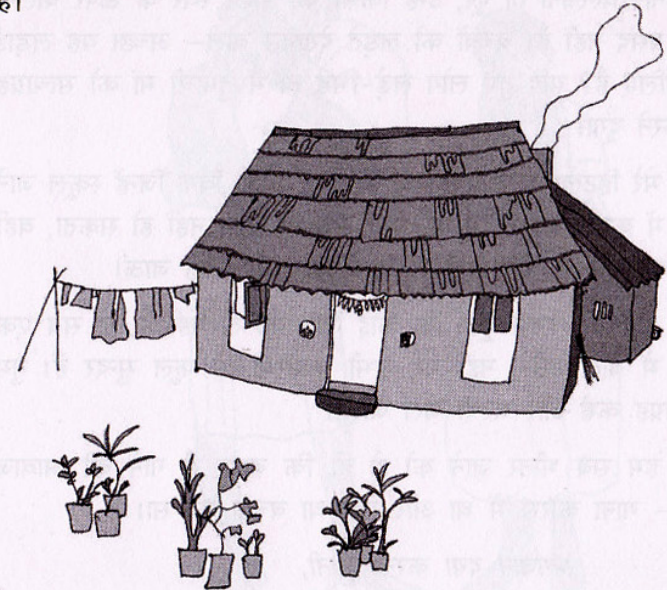
बात बढ़ते-बढ़ते फूलों से हटकर दूसरे ही क्षेत्र में जा पहुंची। एक हिटलर बना, तो दूसरा मुसोलिनी और तीसरा स्टालिन। और मुझे इन तीनों की मां बनने का सौभाग्य एक साथ ही प्राप्त हो गया।

संग्राम में विषैले वाक्यों का प्रयोग होते सुनकर, मुझे चौके का काम छोड़कर, बगीचे की ओर जाना पड़ा। मुझे देखते ही सब एक साथ, अपने-अपने पक्ष का समर्थन कर, न्याय की दुहाई देने लगे। न्याय का कार्य उतना आसान न था, जितना कि एक अदालत के जज का होता है। जज के पथ-प्रदर्शन के लिए कानून होते हैं और नजीरें भी। चाहे लकीर की फकीरी में अन्याय ही क्यों न हो जाए, पर उनका मार्ग स्पष्ट रहता है। मेरे सामने न नजीर थी, न कानून; फिर भी मुझे यह लड़ाई समाप्त करनी थी और न्यायपूर्वक।

मैं सोच ही रही थी कि निर्णय करने के लिए जूरी क्यों न नियत कर लिए जाएं कि इतने में ही बच्चों के काकाजी आते दिखाई दिए। चीखना-चिल्लाना तो दूर, उन्हें किसी का पंचम स्वर के ऊपर बोलना तक पसंद नहीं है। बच्चों को लड़ते देखकर बोले- अच्छा यह लड़ाई किसलिए है? यदि तुम लोग लड़े-भिड़े तो मैं तुम्हारी मां को सत्याग्रह न करने दूंगा।

मेरे हिटलर-मुसोलिनी शांत हो गए। मां के बिना जिन्हें स्कूल जाने तक में कष्ट होता है, मां के बिना जिनका काम नहीं हो सकता, वही मेरे बच्चे चाहते थे कि मैं सत्याग्रह करूं और जेल जाऊं।

अब मैंने उनसे पूछा कि कोई शिकायत तो नहीं है, तो सब एक स्वर में बोल उठे- नहीं मां, सभी क्यारियों के फूल सुन्दर हैं। तुम सत्याग्रह करो और जल्दी जेल जाओ।

हम सब भीतर जाने को थे ही कि बाहर से गाने की आवाज आई- गाना कोरस में था और स्वर था बच्चों का-सा।

भगवान दया करना इतनी,
मोरी नैया को पार लगा देना।

और अब तो हम सब दरवाजे की ओर दौड़ पड़े। उसी समय दूसरा पद सुनाई पड़ा-

मैं तो डूबत हूं मंझधार पड़ी,
मोरी बैंया पकड़के उठा लेना।

बाहर आकर देखा- तीन बच्चे थे, दो लड़कियां और एक लड़का। बड़ी लड़की होगी दस बरस की, छोटी आठ और सात के बीच में थी और लड़का, वह बड़ी की ही गोद में था- कोई तीन साल का। हम लोगों को देखते ही उन लोगों ने गाना बन्द कर दिया। लड़के को गोद से उतारकर, बड़ी ने जमीन से माथा टेककर हमें प्रणाम किया। उसकी देखा-देखी छोटी लड़की और लड़के ने भी जमीन से

माथा टेका और तीनों ने अपने चीथड़ों में छिपे हुए पेट को दिखाकर यह बताया कि वे भूखे हैं। बड़ी के हाथ में एक झोली थी और छोटी के हाथ में टीन का डिब्बा। उन्होंने एक बार झोली की ओर देखा जो बिल्कुल खाली जान पड़ती थी, फ़िर हमारी ओर याचना की दृष्टि से देखने लगे। मैंने उनसे कहा - तुम गाती तो बहुत अच्छा हो और भी कोई गाना जानती हो!

बड़ी के बोलने के पहिले ही छोटी बोल उठी– हमें भजन भी आते हैं, बड़ी मालकिन! और आदेश पाए बिना ही वे दोनों गाने लगीं–

कमर कस ले रे बिलोची, तेरे संग चलूंगी।
तेरे संग चलूंगी रे, तेरे संग चलूंगी।।

कमर कस ले ...
मेरे साथ चलेगी तो तेरी अम्मा लड़ेगी ...।

हम लोगों की हंसी अब दबाए न दबी। अम्मा के लड़ने की बात सुनते ही वह फूट पड़ी। वे सभी शर्माकर चुप हो गए। उनकी दृष्टि से ऐसा जान पड़ता था कि वे किसी अज्ञात भूल से दुःखी हो गए हैं। मैंने हंसी रोककर आश्वासन के रूप में कहा– बहुत अच्छा गाया। मेरी बात सुनते ही वे फिर बैठकर लगे जमीन से माथा टेकने। मैंने पूछा– तुम्हें क्या चाहिए, पका हुआ खाना या कच्चा?

बड़ी ने फिर जमीन से माथा टेककर कहा– कुछ भी खाने को चाहिए बड़ी मालकिन। कल से कुछ नहीं खाया है। मैंने बच्चों से कहा कि इन्हें दो-दो पूरियां लाकर दे दो, और मैं अन्दर चली गई।

बच्चों ने उन्हें कितनी पूरियां दीं, यह तो मैं नहीं कह सकती, पर जब चौके में जाकर देखा तो न डिब्बे में एक भी पूरी थी और न कटोरे में तरकारी।

दूसरे दिन हम लोग सुबह की चाय पीकर उठने ही वाले थे कि वे बाल गवैये फिर आ पहुंचे। हमें कोमल स्वर में सुनाई पड़ा–

सांवरिया हमें भूल गयो, सखि, सांवरिया।
बिंदराबन की कुंजगलिन में बाज रही है बांसुरिया।
हमें भूल गयो, सखि सांवरिया।।

मैंने अपने बच्चों से कहा– कल तुमने इन्हें खूब पूरियां खिलाई थीं न। अब वे फिर से आ गए। जैसे उनके लिए यहां रोज पूरियां धरी हैं!

-धरी तो हैं मां! एक साथ ही बच्चों के मुंह से निकला और सबके हाथ एक साथ ही पूरी के डिब्बे की ओर बढ़े।

मैंने उन्हें रोकते हुए कहा– ठहरो, ठहरो! रोज-रोज इन्हें पूरियां खिलाओगे तो वे दरवाजा ही न छोड़ेंगे। उन्हें चावल या आटा देकर जाने को कह दो।

एक बच्चा बोल उठा– बेचारे छोटे-छोटे बच्चे, न जाने उनके मां भी है या नहीं। वे भला कहां पकाएंगे?

दूसरा ताने के स्वर में बोला– इससे अच्छा तो उन्हें कुछ भी न दिया जाए।
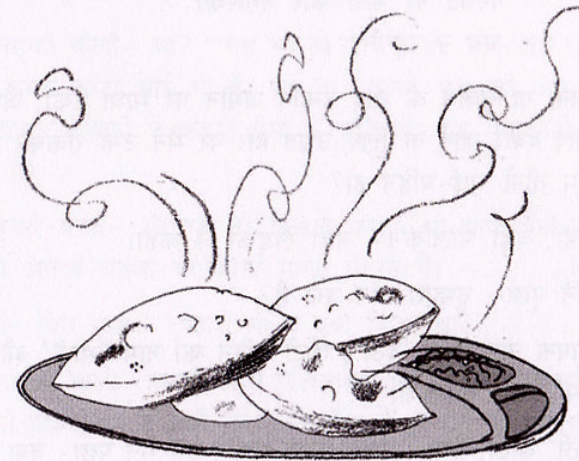
सबसे छोटा बोला– तुम भी मां होकर ऐसा क्यों कहती हो, मां! उन बेचारों को भी भूख लगी होगी। हमारे हिस्से की ही दे दो।

लड़की सब में समझदार थी। उसकी दृष्टि यही चाह रही थी कि मां का इशारा भर मिले और पूरियों का डिब्बा ले जाकर वह पूरियां उन बच्चों को खिला दे।

मैंने उदासीनता से कहा– पूरियां ही दे दो, पर शाम को फिर तुम्हारे लिए नाश्ता बनाना पड़ेगा।

"मां, शाम को नाश्ता नहीं करेंगे," एक स्वर में एक साथ बच्चों ने कहा और हाथ में पूरियां लिए हुए दरवाजे की ओर दौड़े।

चौके का काम निपटाकर मैं बाहर गई। देखा– वे तीनों बड़े मजे से पूरियां खा रहे थे और मेरे बच्चे भी बड़े उत्साह से उन्हें परोस रहे थे। जब वे खा-पीकर उठे तो मैंने कहा– देखो भाई! तुमने पूरियां खा लीं। अब बिना गाना सुनाए न जाने पाओगे। उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक माथा जमीन पर टेककर गाना शुरू किया ···

अब न रहूंगी कान्हा, तोरी नगरिया।
हाट-बाट मेरी गैल न छोड़े,
पनघट पर मोरी फोरे गगरिया।
अब न रहूंगी ···।

गाना गा चुकने के बाद उन्होंने जमीन पर माथा टेका, जैसे हमें आशीर्वाद देकर जाने के लिए उद्यत हों। पर मैंने उन्हें रोककर पूछा– क्या तुम तीनों भाई-बहिन हो?

–हां, बड़ी मालकिन– बड़ी लड़की ने कहा।

मैंने पूछा– तुम्हारा नाम क्या है?

अपना नाम उसने 'ईठी', छोटी बहिन का नाम 'सीटी' और भाई का नाम 'प्रेमा' बतलाया।

ईठी, सीठी, प्रेमा– उनका नाम दुहराते हुए मैंने पूछा- क्या तुम्हारे

मां-बाप कोई नहीं है? तुम कल भी अकेले आए थे, आज भी।

छोटी लड़की बड़ी तत्परता से बोल उठी– मां भी है और बाप भी है, बड़ी मालकिन! हमारे सब कोई है।

–कहां हैं तुम्हारे मां-बाप जो तुम्हें इस तरह अकेले फिरने को भेज देते हैं?

–बाप अमरावती में है और मां ···

–अमरावती में तुम्हारा बाप क्या करता है! मेरा छोटा बेटा बीच में ही पूछ बैठा।

–जेल में है छोटे बाबू– बड़ी लड़की ने उत्तर दिया।

–जेल में है! –मैंने कुछ अनास्था से पूछा– जेल क्यों हुई उसे?

लड़की बोली– वह दारू जो पीता था। और दारू पीकर चुप भी नहीं रहता था। दंगा करता था, मां को मारता था, गाली बकता था और इसलिए वो ···(लड़की आंख उठाकर देखते हुए बोली) बड़ी मालकिन, पुलिसवालों ने उसे पकड़ा और सब लोग कहते हैं, पुलिसवालों ने ठीक किया।

–और तुम्हारी मां, वह अब कहां है? –मैंने पूछा।

लड़की बोली– मां? ···वह भी तो जेल में है। और उसी के साथ हमारा सबसे छोटा भाई भी है। वह तो (अपने भाई की ओर उंगली से दिखाकर लड़की ने कहा) प्रेमा से छोटा है। वह रोता नहीं, इससे अच्छा है।

बेचारे बच्चे– मेरे मुंह से निकल पड़ा– मां-बाप दोनों जेल में और ये अनाथ सड़क पर भीख मांगते फिरते हैं।

मैंने फिर पूछा– तुम्हारी मां ने क्या किया था?

लड़की बोली- हमारी मां ने पुलिसवाले को मारा था, जिसने हमारे बाप को पकड़ा था न उसी को। और फिर वे मां को भी पकड़कर ले

गए। मां के बिना हमको बुरा लगता है, पर यह प्रेमा तो रात-दिन रोता ही रहता है।

मैंने लड़के की ओर देखा- बेचारा छोटा-सा बच्चा, मुश्किल से तीन बरस का, फटे चीथड़ों से लिपटा हुआ, सिर में महीनों तेल का नाम नहीं, रूखे, बिखरे बाल, न जाने कब से नहाया नहीं था, शरीर पर एक मैल की तह-सी जम गई थी, गाल पर आंसुओं के निशान जमे हुए थे, आंसुओं के साथ-साथ उस स्थान की मैल जो घुल गई थी। मुझे उस बच्चे पर बड़ी दया आई।

मैंने उस लड़की से पूछा- तुम लोग अपनी मां से जेल में मिलने नहीं जातीं?

छोटी बोल उठी- जाती हैं बड़ी मालकिन।

बड़ी ने कहा- तीन महीने में एक बार मुलाकात होती है। एक बार मुलाकात करने गए थे, दूसरी बार तीन महीने के बाद जब हम लोग गए तो मालूम हुआ कि मां को यहां के जेल भेज दिया है। तो हम लोग सब, काली मां के साथ यहां चले आए। काली मां भी भीख मांगती है।

-तुम लोग रात को कहां रहती हो? सोती कहां हो? तुम्हें डर नहीं लगता? -मैंने पूछा।

बड़ी लड़की ने कहा- जेल के पास एक नाला है। हम लोग रात को वहीं पुल के नीचे मां की बातें करते-करते सो जाते हैं। कभी-कभी काली मां भी आ जाती है, पर वह रोज नहीं आती।

-मां की सजा कितने दिन की है?

-दो साल की बड़ी- लड़की ने कहा- हम रोज जेल को देखते हैं। हमारी मां वहीं तो है। जब मां छूटेगी, हम उसको साथ लेकर देश जाएंगे।

एक प्रकार की खुशी से बालिका पुलकित हो उठी। अपनी मां को
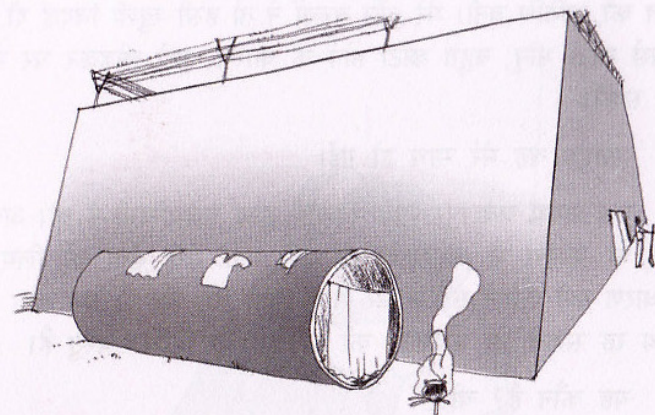
जैसे लेकर वह सचमुच देश जाने की तैयारी कर रही है।

मैंने लड़की से पूछा- तुम लोग नहाते हो कभी? संकोच में बड़ी लड़की चुप रही। छोटी ने कहा- हमारे पास दूसरे कपड़े नहीं हैं न।

मेरा इशारा पाते ही मेरे बच्चों ने अपने पुराने कपड़ों में से बहुत-से कपड़े ला दिए।

मेरा चित उदास हो गया। मैं कमरे में बैठकर कुछ सोचने लगी और वे बच्चे कपड़े लेकर खुशी-खुशी चले गए। कुछ दूर से गाने की आवाज आई-

मैं तो डूबत हूं मंझधार पड़ी,
मोरी बैंया पकड़के उठा लेना।

बहुत से सुन्दर पद पढ़े, लिखे और सुने थे। पर स्वर और आत्मा का ऐसा संयोग तो कहीं नहीं देखा था, शब्द और वस्तु का ऐसा मेल तो कभी चित्रित नहीं हुआ।

मैं उन्हें बुलाने के लिए झपटी, पर तब तक वे दूर निकल गए थे।

इस घटना के दूसरे ही दिन, मैं भी युद्ध-विरोधी सत्याग्रह करके,

जेल की अतिथि बनी। मेरे और बच्चों ने तो हंसी-खुशी विदाई दी, पर सबसे छोटी मीनू, बहुत छोटी होने के कारण, मुझे छोड़कर घर में न रह सकी।

अतएव वह मेरे साथ हो गई।

उस समय जबलपुर जेल में कोई अन्य राजबन्दिनी न थी। अकेले होने के कारण मैं अस्पताल में रखी गई। मेरी सेवा के लिए दो साधारण स्त्री कैदिनें रात में मेरे साथ रहती थीं। दिन में सब लोग एक साथ रह सकते थे। कैदखाने की दुनिया एक विचित्र वस्तु है।

यह कौन है? चोर!

यह? यह चरस बेचती थी और इसने अपने नवजात शिशु की हत्या करने की चेष्टा की थी। पर मां होकर वह हत्या कर सकती थी, इसका मुझे विश्वास न हुआ।

और यह लड़की? यह तो अभी बहुत कम उमर है, इसने क्या किया था? इसने अपने पति और सास को जहर दिया था। मैं कांप उठी! विधाता! क्या यह सचमुच स्त्रियां हैं? तुम्हारी ही आज्ञा से इनका सृजन हुआ होगा?

किन्तु, इसी समय जैसे कोई अन्दर से बोल उठा– यह तस्वीर का एक ही पहलू है-इसकी दूसरी ओर भी देखो! सम्भव है वे निर्दोष हों, सम्भव है वे देवियां हों?

मेरी सेवा के लिए जो दो स्त्रियां तैनात थीं, उनमें से एक तो अल्हड़ थी, जिसे कुछ काम-काज न आता था, पर दूसरी समझदार थी। वह प्रौढ़ा थी। उसकी गोद में भी एक बच्चा था। वह बड़ी फिक्र से सब काम करती थी। वह अधिकतर चुप रहती थी, जैसे सदा मन ही मन कुछ सोचा करती हो। मीनू को तो उसने इस प्रकार मिला लिया था जैसे वह उसी की बच्ची हो। उसका खुद का बच्चा पांव-पांव चलता और मीनू चलती उसकी गोदी में। वह पानी भरती तो मीनू उसके साथ होती, दाल दलती तो मीनू उसके साथ और बरतन मलती
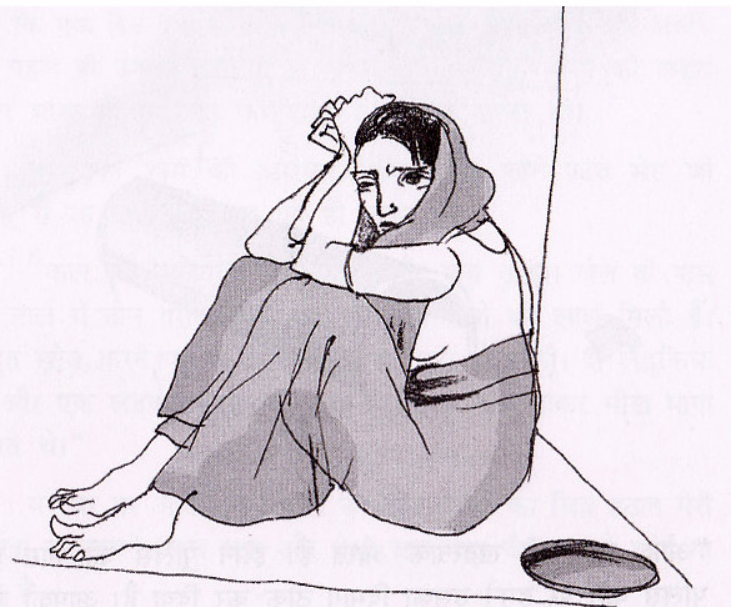
तो मीनू भी उसके साथ छोटी-छोटी कटोरियां और गिलास मलती दीख पड़ती। अन्त को बात इतनी बढ़ी की वह मीनू को अपनी पीठ से बांध कर झाड़ू देने लगी। उसका नाम था लखिया।

लखिया और मीनू के इस स्नेह सम्बन्ध से, लखिया के बच्चे को जो अभाव ज्ञात हुआ उसकी पूर्ति मैं मीनू के फल और मिठाइयां दे-देकर करने लगी। वह प्रायः मेरे ही पास खेला करता। फल और मिठाइयां खाने से इस बच्चे को और पानी भरने, बरतन मलने तथा बगीचा सींचने से मीनू को थोड़े ही दिनों में स्वास्थ्य लाभ होता दिखाई दिया।

मैं बहुत सोचती थी कि यह लखिया कौन है? यह जेल क्यों आई? एक दिन अचानक मैंने प्रश्न किया, जिसका उत्तर मिला-
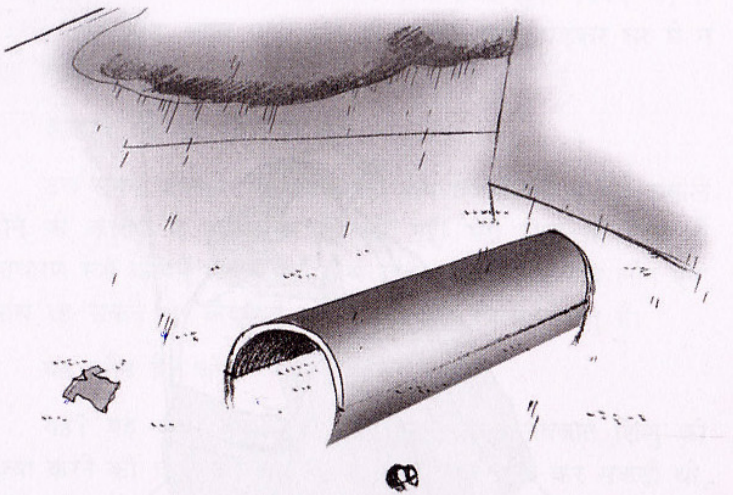
"ओह, यह बड़ी खतरनाक औरत है। इसने पुलिस को मारा है– पुलिस को। पर हमने उसका दिमाग ठीक कर दिया है। आपको कोई तकलीफ तो नहीं देती?"

अचानक मुझे उन बच्चों की याद आ गई। उनकी मां भी तो पुलिस को मारने के कारण जेल भेजी गई थी और उसके साथ भी तो एक छोटा बच्चा था। पूछना मैंने कई बार चाहा, पर लखिया की गम्भीर और उदास मुद्रा देखकर हिम्मत मेरी एक बार भी न हुई।

एक दिन रात को खूब पानी बरसा। खूब दहाड़-दहाड़कर बादल गरजे और कड़क-कड़ककर बिजली चमकी। मुझे अपने बच्चों की याद आ गई। छोटा लड़का डरा होगा। दूसरे पलंग पर सोने पर भी वह बादलों के गरजते ही मेरे पास आकर सो जाता था। इसके साथ मुझे उन तीनों बच्चों की भी याद आई जो बेचारे पुल के नीचे सोते थे। कहीं ··· आगे सोचने की मेरी हिम्मत न पड़ी। मैंने प्रार्थना की, हे ईश्वर सब माताओं के बच्चों को अच्छी तरह रख और सबके बाद मेरे बच्चों की भी रक्षा कर।

जेल में मेरे पास अखबार आया करते थे। जेल की सभी कैदी स्त्रियां लड़ाई की खबरें सुनने को उत्सुक रहा करती थीं। उन्हें विश्वास था कि एक दिन ऐसा होगा जब जेल के फाटक टूट जाएंगे और अवधि से पहले ही उनका छुटकारा हो जाएगा। मैं भी उन्हें योरप की लड़ाई और भारत के सत्याग्रह की खबरें सुना दिया करती थी।

उस दिन शाम को अखबार आया, और पढ़ते-पढ़ते मेरा जी धक् से रह गया! जबलपुर की ही खबर थी–

"कल रात एकाएक पानी बरसा और खूब बरसा। जेल के पास के नाले में तीन गरीब बच्चे बह गए। उन तीनों की लाशें मिली हैं। बहुत खोज करने पर भी इनकी शिनाख्त नहीं हो सकी। दो लड़कियां हैं और एक लड़का। ऐसा सुना गया है कि वे गाना गाकर भीख मांगा करते थे।"

मेरे घर पर आकर गाने वाले उन तीन बच्चों का चित्र हठात मेरी आंखों के सामने खिंच गया और ऐसा जान पड़ा जैसे दूर से कोई गा रहा है–

मैं तो डूबत हूं मंझधार पड़ी,
मोरी बैंया पकड़के उठा लेना।

अखबार रखकर मैं आंसू रोकने का प्रयत्न करने लगी। अचानक मेरे मुंह से निकल गया– "बेचारे बच्चे।"

लखिया पास ही बैठी मेरे लिए चाय तैयार कर रही थी। उसने पूछा– क्या खबर है, बाई साहब! अरे, उदास क्यों हो गईं? बच्चों की याद आ रही है?

मैं उसे कुछ भी उत्तर न दे सकी। वह फिर बोली– थोड़े ही दिन तो और हैं, बाई साहब! कट ही जाएंगे। फिर बच्चे अपने बाप के साथ तो हैं, फिकर क्यों करती हो?

उसकी ओर देखने की मेरी हिम्मत नहीं थी, पर मुझे ऐसा जान पड़ा जैसे उसने बात खत्म होते न होते एक गहरी सांस ली और आंखों के आंसू पोंछ लिए। मैंने अपनी सब शक्ति संचित करके उससे पूछा– लखिया, तेरे और बच्चे हैं, या यही एक है?

आंखों में आंसू और ओठों पर एक क्षीण मुस्कराहट के साथ वह बोली– एक ही क्यों बाई साहब, *(मेरी बच्ची की ओर इशारा करके)* यह बिटिया भी तो है।

मैंने कहा– ये तो जेल के भीतर हैं। जेल के बाहर कितने हैं?

लखिया एक गहरी सांस लेकर बोली– जेल के बाहर बाई साहब, वो तो भगवान के हैं, अपने कैसे कहूं?

और इसके बाद वह अखबार की खबर पूछती ही रह गई, पर मैं उसे कुछ भी न बतला सकी। ❐
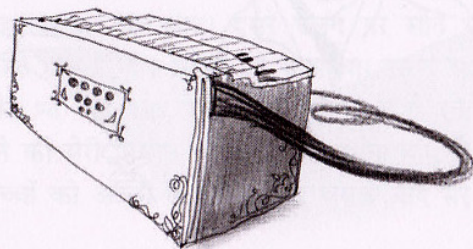
हींग वाला

"अम्मा'' हींग लेगा?" कहता हुआ लगभग 35 साल का एक खान आंगन में आकर रुक गया। पीठ पर बंधे हुए पीपे को खोलकर उसने नीचे रख दिया और मौलसिरी के नीचे बने हुए चबूतरे पर बैठ गया। भीतर बरामदे से एक नौ-दस वर्ष के बालक ने बाहर निकलकर उत्तर दिया, "अभी कुछ नहीं लेना है, जाओ।"

पर खान भला क्यों जाने लगा? जरा और आराम से बैठ गया और अपने साफे के छोर से हवा करता हुआ बोला, "अम्मा, हींग ले लो, अम्मा! हम अपने देश जाता है, बहुत दिनों में लौटेगा।" सावित्री रसोईघर से हाथ धोकर बाहर आई और बोली, "हींग तो बहुत-सी ले रखी है खान! अभी पंद्रह दिन हुए नहीं, तुमसे ही हींग ली थी।" वह उसी स्वर में फिर बोला, "हेरा हींग है मां, हम को तुम्हारे हाथ की बोहनी लगता है। एक ही तोला ले लो, पर लो जरूर।" इतना कहकर फौरन एक डिब्बा सावित्री के
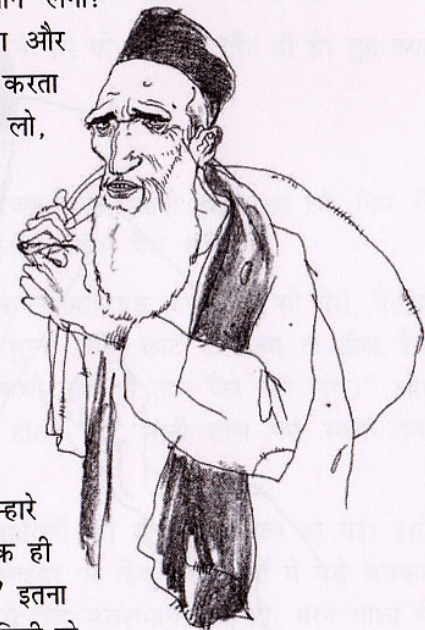
सामने सरकाते हुए कहा, "तुम और कुछ मत देखो मां, यह हींग एक नंबर है, हम तुम्हें धोखा नहीं देगा।"

सावित्री बोली, "पर इतनी हींग लेकर करूंगी क्या? ढेर-सी तो रखी है।" खान ने कहा, "कुछ भी ले लो अम्मा! हम देने के लिए आया है, घर में पड़ी रहेगी। हम अपने देश कूं जाता है। खुदा जाने कब लौटेगा।" और खान उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना हींग तौलने लगा। इस पर सावित्री के बच्चे नाराज हुए। सभी बोल उठे, "मत लेना मां, तुम कभी न लेना। जबरदस्ती तौले जा रहा है।" जब खान ने हींग तौलकर पुड़िया बनाकर सावित्री के सामने रख दी, तब सबसे छोटे बच्चे ने पुड़िया उठाकर खान की ओर फेंकते हुए कहा, "ले जाओ, हमें नहीं लेना है। चलो मां, भीतर चलो।"

सावित्री ने किसी की बात का उत्तर न दे हींग की पुड़िया उठा ली और पूछा, "कितने पैसे हुए खान?"

"पैंतीस पैसे, अम्मा!" खान ने उत्तर दिया। सावित्री ने सात पैसे तोले के भाव से पांच तोले का दाम पैंतीस पैसे लाकर खान को दे दिए। खान सलाम करके चला गया। पर बच्चों को मां की यह बात अच्छी न लगी।

बड़े लड़के ने कहा, "मां, तुमने खान को वैसे ही पैंतीस पैसे दे दिए। हींग की कुछ जरूरत नहीं थी।" छोटा मां से चिढ़कर बोला, "दो मां, पैंतीस पैसे हमको भी दो। हम बिना लिए न रहेंगे।" लड़की जिसकी उम्र आठ साल की थी, बड़े गंभीर स्वर से बोली, "तुम मां से पैसा न मांगो। वे तुम्हें न देंगी। उनका बेटा वही खान है।" सावित्री को इन बच्चों की बातों से हंसी आ रही थी। उसने अपनी हंसी दबाकर बनावटी क्रोध से कहा, "चलो-चलो, बड़ी बातें बनाने लग गए हो। खाना तैयार है, खाओ।"

छोटा बोला, "पहले पैसे दो। तुमने खान को दिए हैं।"

सावित्री ने कहा, "खान ने पैसे के बदले में हींग दी है। तुम क्या दोगे?"

छोटा बोला, "मिट्टी देंगे।"

सावित्री हंस पड़ी, "अच्छा चलो, पहले खाना खा लो, फिर मैं रुपया तुड़वाकर तीनों को पैंतीस-पैंतीस पैसे दूंगी।"

खाना खाते-खाते हिसाब लगाया। एक रुपया के सौ पैसे, पैंतीस पैसे रतन लेगा, पैंतीस पैसे मुन्नी लेगी, छोटे के लिए तो तीस पैसे बचेंगे। छोटा बिगड़ पड़ा, "कभी नहीं, मैं तीस पैसे नहीं लूंगा।" और दोनों में मारपीट हो चुकी होती, यदि मुन्नी तीस पैसे स्वयं लेना स्वीकार न कर लेती।

कई महीने बीत गए। सावित्री की हींग सब खत्म हो गई। इसी बीच होली आई। होली के अवसर पर हिंदू-मुसलमानों में बड़े भयंकर रूप से दंगा हो गया। बहुत से हिंदू-मुसलमान मारे गए, मरने वालों में दो खान भी थे। सावित्री कभी-कभी सोचती, हींगवाला खान तो नहीं

मार डाला गया? न जाने क्यों, उस हींगवाले खान की याद उसे प्राय: आ जाया करती थी। एक दिन सबेरे-सबेरे सावित्री उसी मौलसिरी के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठी कुछ बुन रही थी। उसने सुना, उसके पति किसी से कड़े स्वर में कह रहे हैं, "क्या काम है? भीतर मत जाओ। यहां आओ।" उत्तर मिला, "हींग है, हेरा हींग।" और खान तब तक सावित्री के सामने पहुंच चुका था। खान को देखते ही सावित्री ने कहा, "बहुत दिनों में आए खान! हींग तो कब की खत्म हो गई।"

खान बोला, "देश कूं गया था, अम्मा, परसूं (परसों) ही तो लौटा हूं।"

सावित्री बोली, "यहां तो हिंदू-मुसलमानों में बहुत जोरों का दंगा हो गया है।"

खान बोला, "सुना। समझ नहीं है लड़नेवालों में।"

सावित्री बोली, "खान, तुम हमारे घर चले आए। तुम्हें डर नहीं लगा?"

दोनों कानों पर हाथ रखते हुए खान बोला, "ऐसी बात मत करो अम्मा! बेटे को भी क्या मां से डर हुआ है, जो मुझे होता?" और, इसके बाद ही उसने अपना डिब्बा खोला और एक छटांक हींग तौलकर सावित्री को दे दी। रेजगी दोनों में से किसी के पास न थी। खान पैसे फिर आकर ले जाएगा। सावित्री को सलाम करके वह चला गया।

दशहरा हिंदुओं का बड़ा त्यौहार होता है। पिछले होली पर दंगा हो चुका था। हिंदू होली न जला सके थे। दशहरा वे दूने उत्साह के साथ मनाने की तैयारी में थे।

चार बजे शाम को काली का जुलूस निकलनेवाला था। पुलिस का काफी प्रबंध था। सावित्री के बच्चों ने कहा, "हम भी काली का जुलूस देखने जाएंगे।" सावित्री के पति शहर से बाहर गए थे। सावित्री स्वभाव से भीरू थी। उसने बच्चों को पैसों का, खिलौनों का, सिनेमा का, न

जाने कितने प्रलोभन दिए, पर बच्चे न माने, सो न माने। नौकर रामू भी जुलूस देखने को बहुत उत्सुक हो रहा था। उसने कहा, "भेज दो न मां जी, मैं अभी दिखाकर लिए आता हूं।" लाचार होकर सावित्री को काली का जुलूस देखने के लिए बच्चों को भेजना पड़ा। उसने बार-बार रामू को ताकीद की कि वह दिन रहते ही बच्चों को लेकर लौट आए।

बच्चों को भेजने के साथ ही सावित्री लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। देखते ही देखते दिन ढल चला। अंधेरा भी बढ़ने लगा, पर बच्चे न लौटे। अब सावित्री को न भीतर चैन था, न बाहर। इतने में ही उसे कुछ आदमी सड़क पर भागते हुए जान पड़े। वह दौड़कर बाहर आ गई। उन आदमियों से पूछा, "ऐसे भागे क्यों जा रहे हो? काली का जुलूस तो निकल गया न ?"

एक आदमी बोला, "दंगा हो गया मां जी! दंगा, बड़ा भारी दंगा।" कहता हुआ वह तेजी से आगे बढ़ गया। सावित्री के हाथ-पैर ठंडे पड़ गए। इसी समय कुछ लोग तेजी से आते हुए दिखे। सावित्री ने उन्हें भी रोका। उन लोगों ने कहा, "दंगा हो गया है।"

अब सावित्री क्या करे? उन्हीं में से एक से कहा, "भाई, तुम मेरे बच्चों की खबर ला दो। दो लड़के हैं, एक लड़की। मैं तुम्हें मुंहमांगा इनाम दूंगी।"

एक देहाती ने जवाब दिया, "का हम तुम्हरे बच्चन का पहचानित है मां जी? फिर जान से पियार कुछ नहीं होत।" यह कहकर वे चले गए।

सावित्री सोचने लगी, सच तो है, इतनी भीड़ में भला देहाती मेरे बच्चों को खोजे भी कैसे? पर अब वह भी करे तो क्या करे? उसे रह-रहकर अपने पर क्रोध आ रहा था। आखिर उसने बच्चों को भेजा ही क्यों? वे तो बच्चे ठहरे, जिद तो करते ही, पर भेजना उसके हाथ की बात थी।

सावित्री पागल-सी हो गई। बच्चों की मंगल-कामना के लिए उसने सभी देवी-देवता मना डाले। शोरगुल बढ़कर शांत हो गया। रात के साथ-साथ नीरवता बढ़ चली। पर उसके बच्चे लौटकर न आए। सावित्री हताश हो गई और फूट-फूटकर रोने लगी। इसी समय उसे वह चिरपरिचित स्वर सुनाई पड़ा, "अम्मा!"

सावित्री दौड़कर बाहर आई। उसने देखा, उसके तीनों बच्चे खान के साथ सकुशल लौट आए हैं।

खान ने सावित्री को देखते ही कहा, "बख्त अच्छा नहीं अम्मा! बच्चों को ऐसी भीड़-भाड़ में बाहर न भेजा करो।" बच्चे दौड़कर मां से लिपट गए। ❐